कार्ड चिपचिपा रहा था। वह जल्दी से बूथ का दरवाजा खोलकर भीतर चला आया। कुछ देर तक कार्ड को हाथ में दबाए खड़ा रहा। सितम्बर की चुनचुनाती धूप में न केवल उसकी आँखें, बल्कि देह की नसें, स्नायु, बालों के नीचे तपती हुई खोपड़ी-सब एकसाथ चुँधियाती हुई चमक में झनझना रहे थे।

2. 'निर्मल वर्मा नई कहानी आन्दोलन के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर माने जाते हैं।' उनके कथा साहित्य को केन्द्र में रखकर इसकी समीक्षा कीजिए।

अथवा

निर्मल वर्मा के यात्रा संस्मरण के ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पाठ को विश्ठेषित कीजिए। (18)

3. आपातकाल के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास के मुख्य पात्र रिशी का चरित्र चित्रण कीजिए।

अथवा

महानगरीय जीवन की भीतरी नीरसता और संवेदनात्मक विघटन के संदर्भ में 'रात का रिपोर्टर' उपन्यास की समीक्षा कीजिए। (18)

4. 'रात का रिपोर्टर' उपन्यास की शिल्पगत संरचना को विश्लेषित कीजिए।

अथवा

'रात का रिपोर्टर' को केन्द्र में रखते हुए निर्मल वर्मा के कथा-कौशल को व्याख्यायित कीजिए। (18)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 6930 **L**

Unique Paper Code : 2053100026

Name of the Paper : Raat Ka Reporter

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : VIII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (12×3=36)

(क) बीच में कितने दिन गुजर गए। कभी बिन्दु अपनी यात्राओं पर, कभी वह शहर से बाहर। फिर जून का महीना आया और सब कुछ बदल गया। राय साहब ने उसे बस्तर भेज दिया और वे दुबारा यहाँ कभी नहीं आ सके। इसीलिए जब रिशी ने उसे फोन पर यहाँ मिलने के लिए कहा, तो वह कुछ विस्मित-सी आवाज

में बोली थी - तुम क्या इतनी दूर आओगे? कहीं शहर में नहीं मिल सकते? नहीं, शहर में नहीं, वह कहना चाहता था। अब कोई ऐसी जगह नहीं है, जहाँ वह खुले में उससे मिल सके, सिवाय तिब्बतियों के इस ढाबे में, जो खुद उन्होंने शहर से छिपकर यहाँ बनवाया था। लेकिन उसने कहा कुछ नहीं और जब बिन्दु ने अचानक उसकी चुप्पी को तोड़ते हुए पूछा - रिशी, घर में तो सब ठीक है? तुम ठीक हो?...तब उसे पहली बार झटका-सा लगा कि उसे कुछ भी नहीं मालूम!

(ख) 'आप अजीब आदमी हैं-चलिए मेरे साथ...' वह उसे डॉक्टर के कमरे में ले गई। कमरे में नहीं, उसके सामने, जहाँ एक छोटे बरामदे में, केन की दो कुर्सियाँ पड़ी थीं, बीच में एक मेज थी, जिस पर अंग्रेजी की पत्रिकाएँ पड़ी थीं और पास में एक कट ग्लास का फूलदान, जिसके गुलाब न जाने कब से सूख रहे थे, उसकी सूखी पंखुड़ियाँ झरते हुए एक छोटे-से तालाब में इकट्ठा होती गई थीं। 'आप यहाँ बैठिए, मैं देखकर आती हूँ, वह कब मिल सकती हैं।' नर्स चिक उठाकर कमरे में गई तो इच्छा हुई, वह भी उसके पीछे-पीछे चला जाए। जाकर पूछे, वह कब तक गलियारों के चक्कर लगाता रहेगा? न अपनी पत्नी से मिल सकता है, न बोल सकता है, न उसके कमरे में जा सकता हैय यह कैसा इलाज है, जिसमें जब तक कमरे के भीतर मरीज को इस हालत में लाया जाए कि वह बाहर की दुनिया का सामना कर सके, बाहर का आदमी इस हालत में पहुँच जाए कि सिर्फ खिड़की से नीचे कूदने के अलावा कोई रास्ता दिखाई न दे।

(ग) तुम आत्मकथा क्यों नहीं लिखते, राय साहब कहा करते थे। तुमने देखा नहीं, जिन देशों में सेंसरशिप है, वहाँ के लेखकों ने सबसे बढ़िया आत्मकथाएँ लिखी हैं... क्योंकि 'आत्म' पर कोई पाबन्दी नहीं लगा सकता। इससे बेहतर मौका तुम्हें कब मिलेगा, जब तुम दुनिया के बारे में कुछ नहीं लिख सकते। दुनिया न सही, आत्मा तो कहीं नहीं गई... वैसे भी अगर तुम सच और झूठ के चक्कर में फँसे रहोगे, तब तक रिपोर्टर ही बने रहोगे - राय साहब आधी हँसी, आधे व्यंग्य में कहा करते थे - आत्मकथा दोनों के ऊपर हैय बह मृत्यु की तरफ बहती है, यही उसका सच है, झूठ का पता तो मृत्यु के बाद चलता है, लेकिन आत्मकथा हमेशा उससे पहले खत्म हो जाती है... और तब उसे याद आया, अपनी फेहरिस्त में राय साहब का नाम भी जोड़ना होगा...

(घ) वे सँकरी लेन को छोड़कर कर्जन रोड की पक्की सड़क पर चले आए, ट्रैफिक लाइट्स के गोल टापू का चक्कर लगाया, और फिर फिरोजशाह रोड के नुक्कड़ पर आकर बिलकुल फुटपाथ से सटाकर गाड़ी रोक दी। हैंडिल घुमाकर दरवाजा खोला और जब वह बाहर आ गया, तो झुककर उससे हाथ मिलाया, "कभी जरूरत पड़े तो..."

अचानक उसे लगा, उसके हाथ में कोई कड़ी-सी चीज आ गई है। उसने उसे दबोच लिया। जब उनकी कार आँखों से ओझल हो गई, तो उसने हथेली खोली-पसीने में भीगा उनका विजिटिंग